(IJASSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

# ASTROLOGY IN THE LITERATURE OF TULSIDAS

**Dr Ranjeet Kaur**

*Associate Professor, Department of Education, Khunkhunji Girls' Degree College, Lucknow*

# तुलसीदास के साहित्य में ज्योतिष–शास्त्र

**डॉ0 रंजीत कौर**
*एसोसिएट प्रोफेसर*
*शिक्षा–विभाग*
*खुनखुन जी गर्ल्स डिग्री कालेज,*
*लखनऊ*

---

*तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा करण की गणना से फलाफल का विचार करने वाले शास्त्र को ज्योतिष कहते हैं। ज्योतिष दो प्रकार की होती है (1) गणित ज्योतिष (2) फलित ज्योतिष।*

*गणित ज्योतिष में ग्रह, नक्षत्र आदि की गतियों को गणित के आधार पर शुद्धता से आँका जाता है। प्राचीन भारतीय ऋषियों और ज्योतिषाचार्यों ने अथक परिश्रम के द्वारा विभिन्न ग्रहों, नक्षत्रों आदि की गतियों, स्थितियों तथा मानव समाज पर पड़ने वाले उसके प्रभावों का विस्तृत वर्णन किया है। फलित ज्योतिष में विभिन्न समयों में होने वाले जन्म एवं कर्मों के भविष्यफल का विस्तृत वर्णन होता है। ज्योतिष वेदों का छठा अंग भी है। ज्योतिष शास्त्र के आदि निर्माताओं में भगवान शिव, ब्रम्हा, नारद, सूर्य, गर्ग, भृगु आदि देव तथा ऋषिगण आते हैं। कालान्तर में वराहमिहिर, भास्कराचार्य तथा आर्यभट्ट आदि गणितज्ञों ने इस विषय के ज्ञान को नई दिशा दी है।*

*भारतीय ज्योतिष की गणना दो प्रकार से की जाती है – चन्द्रमा के आधार पर (चान्द्रमत) तथा सूर्य के आधार पर (सौरमत)। चान्द्रमत के अनुसार एक वर्ष को 12 महीनों (चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आस्विन, कार्तिक,*

(IJASSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

*मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन) तथा 27 नक्षत्रों (अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आद्र्रा, पुनर्वसु, पुण्य, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाषा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, पूर्व भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद, रेवती) में विभाजित किया जाता है। जबकि सूर्य के चारों ओर घूमने के लिए बने हुए पृथ्वी के अण्डाकार मार्ग (कक्षा) को 12 भागों में विभक्त करके 12 राशियों (मेष, बृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन) में बाँटा गया है। ये राशियाँ क्रमशः बैसाख से आरंभ होकर चैत्र में पूर्ण होती है। भारतीय ज्योतिष में ग्रह बड़े महत्वपूर्ण हैं। ये 9 होते हैं – (सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, राहु तथा केतु) इनका एक राशि पर निवास करने का समय भी भिन्न–भिन्न होता है जिसके आधार पर फलादेश की गणना की जाती है। भारतीय ज्योतिष में तिथि, वार, योग, करण तथा ताराबल की भी बड़ी महत्ता है।*

*भारतीय समाज में (फलित) ज्योतिष के दो रूप मिलते हैं – (1) शास्त्रीय रूप (2) लौकिक रूप। शास्त्रीय रूप में अनुसार विद्धान ज्योतिषी गणना करता है, जो प्रायः अधिक प्रामाणिक मानी जाती है और नगरों या विशिष्ट वर्गों में इसका बड़ा महत्व है। दूसरे (लौकिक) रूप में शकुन–अपशकुनों के आधार पर भी जनसामान्य फलादेश का अनुमान करता है। भारतीय ज्योतिष में हस्त अथवा मस्तक की रेखाओं के आधार पर भी फलादेश की गणना करने का प्रचलन है।*

*गोस्वामी तुलसीदास जी ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्धान थे। इन्होंने अपने मित्र गंगाराम ज्योतिषी को प्राणसंकट से उबारने के लिए केवल 6 घण्टे में रामाज्ञा प्रश्न जैसे ज्योतिष ग्रन्थ की रचना की, जिसके आधार पर आज भी लोग फलादेश प्राप्त करते हैं। इनके द्वारा निर्मित रामशलाका प्रश्नावली (जो गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित प्रत्येक रामचरितमानस के प्रारम्भ में दी हुई है) के आधार पर लोग फलादेश प्राप्त करते है।*

*यहाँ तुलसीदास के ज्योतिष ज्ञान सम्बन्धी कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं –*

***1– <u>व्यापार के लिए अच्छे नक्षत्र</u> :***

***श्रुति गुन कर गुन पु जुग मृग हय रेवती सखाउ।***
***देहि लेहि धन धरनि धरू गए हुँ न जाइहि काउ।।[1]***

*अर्थात श्रवण–नक्षत्र से तीन नक्षत्र (श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष), हस्त नक्षत्र से तीन नक्षत्र (हस्त, चित्रा, स्वाती), 'पु' से आरम्भ होने वाले दो नक्षत्र (पुस्य, पुनर्वसु) और मृगशिरा, अश्विनी, रेवती तथा अनुराधा–इन बारह नक्षत्रों में धन, जमीन और धरोहर का लेन देन करो, ऐसा करने से धन जाता हुआ प्रतीत होने पर भी नहीं जायेगा।*

***2– <u>वस्तु–हानि और नक्षत्रों का सम्बन्ध</u> :***

***ऊगुन पूगुन बि अज कृ म आ भ अ भू गुनु साथ।***
***हरो धरो गाड़ो दियो धन फिरि चढ़ई न हाथ।।[2]***

*अर्थात 'उ' से आरम्भ होने वाले तीन नक्षत्र (उत्तरा–फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद), 'पू' से आरम्भ होने वाले तीन नक्षत्र (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ी, पूर्वाभाद्रपद), वि (विशाखा), अज (रोहिणी), कृ (कृतिका), म (मघा), आ (आद्रा), भ (भरणी), अ (अश्लेषा) और मू (मूल) को भी इन्हीं के साथ समझ लो – इन चौदह नक्षत्रों में हरा हुआ (चोरी गया हुआ), धरोहर रक्खा हुआ, गाड़ा हुआ तथा उधार दिया हुआ धन फिर लौटकर हाथ नहीं आता।*

***3– <u>हानिकारक तिथियाँ</u> :***

***रबि हर दिसि गुन रस नयन गुनि प्रथमादिक बार।***
***तिथि सब काज नसावनी होइ कुजोग बिचार।।[3]***

(IJASSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

*अर्थात द्वादशी, एकादशी, दशमी, तृतीया, षष्ठी, द्वितीया, सप्तमी– ये सातों तिथियाँ यदि क्रम से रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनिवार को पड़ें तो ये सब कामों को बिगाड़ने वाली होती है और यह कुयोग समझा जाता है।*

***4– <u>संस्कारों में ज्योतिष का प्रयोग</u>*** *: गोस्वामी जी ने विभिन्न संस्कारों में जहाँ ज्योतिष को महत्ता दी है, वहीं ज्योतिष गणना के आधार पर विभिन्न संस्कारों का समय निश्चित किया गया है*

***श्रीराम के जन्म पर –***

*जोग लगन त्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।*
*चरू अरू अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल।।*
*नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरि प्रीता।।*[4]

***नामकरण पर गुरू वशिष्ठ का ज्योतिष गणना के अनुसार चारों भाईयों का नाम रखना –***

*इन्ह के नाम अनेक अनूपा। मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा।।*[5]

***विवाह में –***

*समउ बिलोकि बसिष्ठ बोलाए। सादर सतानंदु सुनि आए।।*[6]

***विवाह के लग्न पर विचार –***

*ग्रह तिथि नखतु जोगु बर बारू। लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू।।*
*पठै दीन्हि नारद सन सोई। गनी जनक के गनकन्ह होई।।*[7] *आदि।*

***5– <u>हस्त रेखा का ज्ञान</u>*** *: गोस्वामी जी ने हस्तरेखा–ज्ञान को भी ज्योतिष का एक अंग स्वीकार किया है –*

*अवध आजु आगमी एकु आयो।*
*करतल निरखि कहत सब गुन गन, बहुतन्ह परिचौ पायो।।*

X X X X X X

*नख सिख बाल बिलोकि बिप्रतनु पुलक, नयन जल छायो।*

(IJASSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

*लै लै गोद कमल कर निरखत, उर प्रमोद न अमायो।।*
*जनम प्रसंग कह्यो कौसिक मिस सीय–स्वयंबर गायो।*
*राम, भरत, रिपुवदन, लखन को जय, सुख सुजस सुनायो।।*[8]

***6– <u>मस्तक की रेखाओं के आधार पर विचार</u>*** *: ऐसा विश्वास है कि विधाता सबका भाग्य उसके मस्तक पर लिख देते हैं। पार्वती जी इस बात को स्वीकारती हैं–*

*दुख सुख जो लिखा लिलाट हमरे जाब जहै पाउब तहीं।*[9]

*रावण अपने ललाट की भाग्य रेखाओं को पढ़कर उसको उपहास तो करता है, किन्तु ये रेखाए सत्य सिद्ध होती हैं –*

*जरत बिलाकेउँ जबहिं कपाला। बिधि के लिखे अंक निज भाला।।*
*नर कें कर आपन बध बाँची। हसेउँ जानि बिधि गिरा असाँची।।*
*सोउ मन समुझि त्रास नहिं मोरें। लिखा बिरंचि जरठ कति भोरें।।*[10]

***7– <u>शनिग्रह का प्रभाव</u>*** *: शनि एक राशि पर ढ़ाई वर्ष रहता है। उस राशि तथा उसके आगे और पीछे की राशियों पर शनि की साढ़े साती होती है। जब शनि की साढ़े साती होती है तब उस राशि के प्राणी को बड़ा कष्ट होता है। मीन राशि पर शनि के निवास होने के कारण मानव–समाज तथा धर्म की बड़ी हानि होती है। गोस्वामी जी ने इसे इस प्रकार प्रस्तुत किया है –*

*एक तौ कराल कलिकाल सूल–मूल, तायें*
*कोढ़मेकी खाजुसी सनीचरी है मीन की।*
*बेद–धर्म दूरि गए, भूमि चोर भूप भए,*
*साधु सीघमान जानि रीति पाप पीन की।।*[11]

***8– <u>शकुन–अपशकुन का विचार</u>*** *: तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में शकुन–अपशकुन की भी चर्चा की है।*

(IJASSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

***शकुन के अन्तर्गत*** *– पुरूषों का दाहिना अंग फड़कना*

*भरत नयन भुज दच्छिन फरकत बारहीं बार।[12]*

***स्त्रियों का बायाँ अंग फड़कना –***

*प्रभु पयान जाना वैदेही। फरकि बॉम अंग जनु कहि देहीं।।[13]*

***यात्रारम्भ के शकुन –***

*नकुल सुदासन दरसनी, छेमकरी चक चाष।*

*दस दिसि देखत सगुन सुभ, पूजहि मन अभिलाष।।[14]*

*पेखि सप्रेम पयान समै सब सोच बिमोचन छेमकरी है।।[15]*

***बायें छींक होना –***

*एतना कहत छींक भइ बॉयें कहत सगुनिअन्ह खेत सुहाँये।।[16]*

***अपशकुन***

***स्त्रियों का दाहिंनी आँख फड़कना, बुरे स्वप्न देखना –***

*सुन मंथरा बात फुरि तोरी। दहिनि आँख नित फरकई मोरी।।*

*दिन प्रति देखउँ राति कुसपने, कहउँ न तोहिं मोह बस अपने।।[17]*

***कौवों और सियारों का बुरी तरह शब्द करना –***

*कटु कुठाँय करटा रटहिं, फकरहिं फेरू कुभॉति।[18]*

***दिन में उल्कापात, दिग्दाह होकर कुत्ते, सियार आदि का विलाप करना –***

*ऊकपात दिगदाह दिन, फेकरहिं स्वान सियार।*

*उदित केतु, गत हेतु महि, कँपति बारहिं बार।।[19]*

*असगुन होंहिं नगर पैठारा। रटहिं कुभाँति कुखेत करारा।*

*खर सियार बोलहिं प्रतिकूला। सुनि सुनि होइहँ भरत मन सूला।।[20]*

*इस प्रकार गोस्वामी जी ने जहाँ अपने काव्य में शास्त्रीय ज्योतिष के विभिन्न रहस्यों और फलादेशों की महत्ता स्वीकार की है वहीं लोक–जीवन में विभिन्न*

(IJASSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

*शकुनों–अपशकुनों का महत्व भी स्वीकार किया है। इनके काव्य में शास्त्रीय ज्योतिष और लोकमान्यता का सुन्दर समन्वय मिलता है।*

***(झ) <u>प्रस्थान के लिए मुहूर्त</u>** : यात्रा आरम्भ करते समय दिन, नक्षत्र तथा दिशाशूल के आधार पर उत्तम मुहूर्त का निश्चत किया जाता है। किन्तु जब अचानक किसी यात्रा की अत्यधिक आवश्यकता बन पड़ती है, तब द्विघड़िया मुहूर्त (द्विघटिका मुहूर्त) का विधान बताया गया है। इसका उल्लेख अथर्ववेद, महाभारत, रूद्रयामलतंत्र आदि प्राचीन ग्रन्थों में पाया जाता है।[21] यह आज तक लोकजीवन में बहुत प्रसिद्ध है। दशरथ के निधन तथा राम के वनगमन का समाचार मिलने पर राजा जनक को तत्काल यात्रा करनी आवश्यक जान पड़ी। इसलिए यात्रा में इसी आधार पर मुहूर्त का विचार किया गया –*

***दुघरी साधि चले ततकाला। किए बिश्रामु न मगु महिपाला।।[22]***

(IJASSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची


1. तुलसीदास, दोहावली, 456
2. वही, 457
3. वही, 458
4. तुलसीदास, रामचरितमानस 1/190 दो0, 191/1
5. वही, 1/197/2
6. वही, 1/322/1
7. वही, 1/312/3, 4
8. तुलसीदास, गीतावली, 1/17/1,4,5
9. तुलसीदास, रामचरितमानस 1/97/छंद
10. वही, 6/29/1, 2
11. तुलसीदास, कवितावली 7/177/1, 2
12. तुलसीदास, रामचरितमानस, 7
13. वही, 5/35
14. तुलसीदास, दोहावली 460
15. तुलसीदास, कवितावली, 7/180
16. तुलसीदास, रामचरितमानस /192
17. वही, 2/20
18. तुलसीदास, रामाज्ञाप्रश्न 3/1–5
19. वही, 5/6–3
20. तुलसीदास, रामचरितमानस 2/158
21. शरणदास, अन्जनीनन्दन, मानस पीयूष, खण्ड 4, गीताप्रेस, गोरखपुर, 6 संस्करण सं0–2049, पृ0 962
22. तुलसीदास, रामचरितमानस 2/272/3

(IJASSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

## REFERENCES

1. Tulsidas, Dohavali, 456
2. Ibid, 457
3. Ibid, 458
4. Tulsidas, Ramcharitmanas 1/190 Doha 191/1
5. Ibid 1/197/2
6. Ibid 1/322/1
7. Ibid 1/312/3, 4
8. Tulsidas, Geetavali 1/17/1, 4, 5
9. Tulsidas, Ramcharitmanas 1/97 Verse
10. Ibid 6/29/1, 2
11. Tulsidas, Kavitavali 7/177/1, 2
12. Tulsidas, Ramcharitmanas, 7
13. Ibid 5/35
14. Tulsidas, Dohavali, 460
15. Tulsidas, Kavitavali 7/180
16. Tulsidas, Ramcharitmanas, /192
17. Ibid 2/20
18. Tulsidas, Ramagyaprashn 3/1-5
19. Ibid 5/6-3
20. Tulsidas, Ramcharitmanas, 2/158
21. Sharandas, Anjaninandan, Manas Piyush, Part 4, Geeta Press, Gorakhpur, 6th Edition, Sr. 2049, pg 962
22. Tulsidas, Ramcharitmanas, 2/272/3